भाईजी, वामपंथ और राष्ट्रहित का पाला : एक प्रातःकालीन संवाद

फटक चंद गिरधारी

मुहल्ले के भाई जी से अपन का प्रेमभाव बना रहता है। सुबह-सुबह शाखा से लौटते हुए अक्सर आ जाते हैं। अदरक-तुलसी-गुड़ की चाय बनवाकर पीते हैं, अखबार पढ़ते हैं, कुछ गपशप करते हैं, फिर अपने डेरे पर जाते हैं।

अभी उस दिन बोले, "गिरधारी, ये जो वामपंथी हैं न! ये अन्दर से खोखले हो चुके हैं। इनकी नैतिक पराजय हो चुकी है। इनका दोहरा व्यवहार और कमज़ोर चरित्र हमारी विजय नहीं तो भला और क्या है?"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा। थोड़ा और साफ कीजिए।"

"अब देखो, नामवर सिंह तो मार्क्सवादी विद्वानों के शीर्ष पुरुष हैं न! तुम्हे याद हो, न याद हो, चार साल पहले विश्व पुस्तक मेले में उन्होंने भाजपा से जुड़ी उसी लेखिका की पुस्तक का विमोचन किया जिसकी पुस्तक पिछले साल जब प्रेमचन्द की पुस्तक को हटाकर पाठ्यक्रम में रखी गयी थी, तो वामपंथियों ने आसमान सिर पर उठा लिया था। उस महिला की पुस्तक का विमोचन करने पर जब सवाल उठे तो नामवर सिंह ने यह पोली और बोदी-सी सफाई दी थी कि 'दरअसल वे हमारी पड़ोसी हैं और वैसे भी भाजपा में उनकी कोई खास हैसियत नहीं है।' अब देखो। फर्क क्या है! तुम आर.एस.एस. के किसी भी बौद्धिक से किसी वामपंथी की पुस्तक का विमोचन नहीं करवा सकते। वह अपनी निष्ठा के विरुद्ध नहीं जायेगा। नामवर विद्यानिवास जी का चरण-स्पर्श कर सकते हैं। पर विद्यानिवास जी नामवर से कभी हाथ नहीं मिला सकते। त्रिलोचन ने आख़िर भाजपा के मंत्री से पुरस्कार लिया था या नहीं? क्या कमी है उन्हें इस समय? रोटी भी नसीब है और यश भी। पर निष्ठा कमजोर हो गई है इन जड़, नास्तिक भौतिकवादियों की!"

थोड़ी देर रुककर भाई जी बोले, "हो सकता है, त्रिलोचन शास्त्री वद्धावस्था में आकर इहलोक-परलोक की सोचने लगे हों। वेदों और संस्कृति के प्रकाण्ड अध्येता रहे हैं। विचार बदलते भी हैं। त्रिलोचनजी आजकल प्रायः बहुत अच्छी बात कहते हैं। भारतीय इतिहास के गौरव के बारे में डा. रामविलास शर्मा ने भी अत्यंत उपयोगी बातें कही हैं। थोड़ा-बहुत देखता रहा हूँ। वे देशभक्त वामपंथी हैं। मैं तो उन्हें वामपंथी मानता ही नहीं। वे एक देशभक्त विद्वान हैं", थोड़ी देर रुककर भाई जी ने पूछा, "क्या शर्मा जी पूजा करते थे?"

"पता नहीं। यह मैं कैसे जानूँगा?"

"जानना चाहिए। जानना चाहिए।" भाईजी हँसकर बोले।

"देखो ये भारतीय वामपंथी संसद में बैठे-बैठे पहले ही जंग खा चुके हैं। सोवियत संघ के पतन के पहले ही इनका पतन हो चुका था। सी.पी.आई. वाले तो आपातकाल में इंदिरा गाँधी को समर्थन के समय ही खत्म हो चुके थे। सी.पी.एम. वालों को भी सत्ता का स्वाद लग चुका है। इनके बुद्धिजीवी विश्वविद्यालयों के महन्त बन चुके हैं। ये अखबारों में बयान देने और दिल्ली में विरोध-प्रदर्शन से आगे कुछ नहीं कर सकते। ये संघ की संघर्षशीलता का मुकाबला नहीं कर सकते।" भाईजी लगभग ताल ठोंकने की मुद्रा में आ गये।

"वैसे मैंने सुना है कि आपातकाल में माफीनामा तो संघ के कुछ नेताओं ने भी लिखा था।"

"झूठ, सफेद झूठ!" भाईजी चीखे।

"और संघ इस आरोप का उत्तर क्यों नहीं देता कि राष्ट्रीय आंदोलन में उसकी कोई भूमिका नहीं थी..."

"क्या तुम वामपंथियों की लिखी इतिहास की पुस्तकें पढ़ने लगे हो?" भाईजी ने शंका से मुझे देखा।

"वही ज्यादातर मान्य और स्थापित हैं!"

"यही तो राष्ट्र-विरोधी साज़िश है।"

मैंने बात बदलते हुए कहा, "ये विश्वविद्यालयों के वामपंथी विद्वान और वामपंथी नेतृत्व के लोग भले ही सुविधाभोगी हो गये हों, अभी भी मज़दूरों-किसानों में निष्ठा और ईमानदारी से लगे हुए वामपंथी कार्यकर्ता हैं। सफेदपोश मज़दूरों में बी.एम.एस. जरूर बढ़ा है और सीटू, एटक, आदि लगातार कमज़ोर हुए हैं अपनी सिद्धान्तहीनता के चलते। पर सरकारी नीतियाँ जिस तरह मज़दूरों-किसानों पर प्रभाव डाल रहीं हैं, उससे मुझे तो लगता है कि उनमें वामपंथ के पुनरोदय की नई ज़मीन तैयार हो रही है। सिर्फ भारतीय संस्कृति की रक्षा के नारे से आप आबादी के उस हिस्से को साथ नहीं ले सकते। "स्वदेशी" के नारे को भी वे लोग धीरे-धीरे चुनावी हथकण्डा समझने लगे हैं, जैसे कि मन्दिर के सवाल को.... जहाँ तक वामपंथी बुद्धिजीवियों की बात है, ऐसा नहीं कि सब अवसरवादी हो चुके हों...."

"अच्छा! तुम तो कुछ उग्र वामपंथी जैसी बातें कर रहे हो?" भाईजी बात काटते हुए बोले, "तुम भी जड़ भौतिकवादी होते जा रहे हो। पर हम तुम्हें उधर नहीं जाने देंगे। तुम्हें राष्ट्रहित के पाले में ही लायेंगे हम!" भाईजी उठने लगे।

राष्ट्रहित का पाला किधर है मैं देखने लगा।

●